उभरे अक्षर

(लुई ब्रेल स्मृति लघु काव्य)

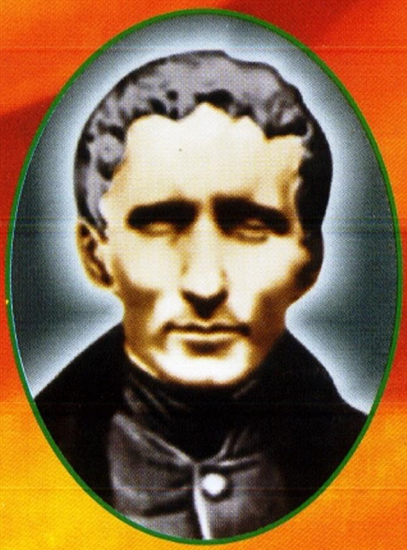

उभरे अक्षर

(लुई ब्रेल स्मृति लघु काव्य)

उभरे अक्षर

(लुई ब्रेल स्मृति लघु काव्य)

प्रकाशक:

ऑल इंडिया कन्फैडरेशन ऑफ दि ब्लाइंड

सैक्टर - 5, रोहिणी, दिल्ली-110085.

उभरे अक्षर
(लुई ब्रेल स्मृति लघु काव्य)

प्रथम संस्करण: जनवरी, 2009

प्रकाशक: ऑल इंडिया कन्फैडरेशन ऑफ दि ब्लाइंड

©:ऑल इंडिया कन्फैडरेशन ऑफ दि ब्लाइंड

मुद्रक:
रिलायंस प्रिंटिंग्स, दिल्ली

उद्भावना

एक लम्बे अर्से से परिसंघ में कार्यरत मनीषियों के मन में यह सवाल कौंधता रहा है कि लुई ब्रेल जैसे महापुरुष पर अब तक कोई काव्य-ग्रन्थ क्यों नहीं रचा गया? आखिर हमारा यह मसीहा, हमारा यह उद्धारक, किस बात में अन्य महापुरुषों से कम है? हम दृष्टिबाधितों के लिए तो ये सचमुच भगवान साबित हुए हैं। इनके द्वारा ब्रेल लिपि के आविष्कार से दृष्टिबाधितों की विश्वभर में जो अनन्य सेवा हुई है, जो परम कल्याण हुआ है, उसे कौन विस्मृत कर सकता है। इस महानायक के क्रांतिकारी आविष्कार के बिना तो हम दृष्टिबाधित लोग अपने आज के सम्मानपूर्ण जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

अत: लुई ब्रेल के द्विजन्मशती समारोह के शुभ अवसर पर इस काव्य-संग्रह को प्रकाशित कर हमारे परिसंघ की मनोकामना पूर्ण हो रही है। इस लघु काव्य-संग्रह के माध्यम से अनेक काव्यानुरागियों (जिनमें दृष्टिवान और दृष्टिबाधित दोनों सम्मिलित हैं), ने लुई मसीहा पर अपनी काव्यांजलि अर्पित की है। इस प्रकार एक लघु काव्य की सुखद स्थिति वाली रचनाएं काव्य में निरूपित हुई हैं और हम आशा करते हैं:

"ब्रेल लिपि दृगहीन जगत को सहज-सरल सम्भाव्य बना दे,
'मधुकर' के शब्दों में ढलकर सुन्दर जीवन काव्य बना दे।"

आशा है, यह कृति आपका स्वस्थ मनोरंजन करेगी और हमारी अनन्य भावानाओं का स्फुरण इन विविध काव्यानुभूतियों के माध्यम से आप तक इस संदेश के साथ पहुँचेगा:

"दृष्टिहीन है ठीक, हृदय से हीन नहीं हैं,
परवश हैं, पर परवशता में लीन नहीं हैं।"

परिसंघ इस पावन-पुनीत काव्य प्रस्तुति में सफल हुआ है, इसकी

सुखद अनुभूति के साथ हम यह काव्य-कृति अपनी मंगलमय भावना सहित सुधी पाठकों के करकमलों में समर्पित करते हैं।

हम उन सभी मनीषियों के प्रति अपना हार्दिक आभार भी व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इसके लिए अपनी रचनाएं देकर हमें और हमारे दृष्टिबाधित साथियों को अनुगृहीत किया है। हम विशेष रूप से श्री तालेवर मधुकर के आभारी हैं, जिन्होंने अपनी सेवाएं देकर **उभरे अक्षर** को सही तरीके से उभारने में सहयोग दिया है।

जे.एल. कौल
महासचिव
ऑल इंडिया कन्फैडरेशन ऑफ दि ब्लॉइंड

भूमिका

मानव सभ्यता को अमूल्य योगदान देने वाले लुई ब्रेल की स्मृति में **उभरे अक्षर** लघु काव्य का प्रकाशन हिन्दी काव्य जगत की एक अनूठी एवं अत्यंत सुखद घटना है। किसी भी भाषा की कविता का महत्त्वपूर्ण दायित्व मानवीय मूल्यों का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार करना होता है। मानव सभ्यता के उच्चतम मूल्य, मानवीय उपलब्धियों, महापुरुषों की जीवनगाथाएं, किसी समाज अथवा सुमुदाय की जातीय स्मृतियां कविताओं में एक अमिट दस्तावेज़ का रूप ले लेती हैं। मानव-रूपधारी श्री राम को भले ही परलोक गमन करना पड़ा हो, लेकिन रामकथा, कविता के माध्यम से सैकड़ों वर्षों से जीवित है और जीवित रहेगी। यही कारण है कि अनेक महापुरुषों के जीवन पर कवियों ने महाकाव्य, खंडकाव्य या विशिष्ट कविताएं रची हैं। फ्रांस के लुई ब्रेल ने ब्रेल लिपि का आविष्कार करके पूरी दुनियां के करोड़ों मनुष्यों के जीवन को एक नया अर्थ दिया। हर अंधेरी जिंदगी में ज्ञान का उजाला भर दिया। लुई ब्रेल द्वारा निर्मित ब्रेल लिपि से करोड़ो दृष्टिबाधित वे सभी सफलता एवं उपलब्धियां हासिल कर रहे है, जो दृष्टिवानों को उपलब्ध हैं और अपने राष्ट्र को अपना भरपूर योगदान देकर सम्मान का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शब्द के श्रेष्ठतम रूप कविता के माध्यम से जो श्रद्धा सुमन रचनाकारों ने अर्पित किये हैं, वह अत्यंत प्रासंगिक है, विशेषकर लुई ब्रेल के जन्मद्विशती समारोह के अवसर पर।

उभरे अक्षर काव्य संग्रह में कविता की अनेक विधाएं हैं:

पारंपरिक कविता, छंद, गीत, गज़ल, दोहे और मुक्त छंद कविताएं । जैसाकि प्राय: हर कविता संग्रह में होता है, कुछ कविताएं जहां सीधी सपाट हैं, वहीं कुछ अत्यंत उत्कृष्ट, व्यंजनापूर्ण, मार्सिक एवं प्रभावशाली हैं। इन कविताओं के पाठक को लुई ब्रेल के जीवन, उनके संघर्ष, उनकी उपलब्धि और उनके महान योगदान का भरपूर परिचय मिल जाता है और इस नाते संग्रह अपनी सार्थकता और लक्ष्य की पूर्ति करता है। संग्रह के कवियों में यदि

दृष्टिबाधित हैं तो दृष्टिवान भी, क्योंकि कोई भी महापुरुष कभी भी किसी एक वर्ग या समूह का नहीं होता। वह सम्पूर्ण मानवता का होता है। रचनाकारों में अनेक सुपरिचित एवं प्रसिद्ध नाम हैं जो पूरे देश में अपनी रचनाओं के लिए विख्यात हैं।

उभरे अक्षर के प्रसंग में यह बात भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी का उत्थान नारेबाजी अथवा हिन्दी सप्ताह या पखवाड़ा मनाने से उतना नहीं होगा जितना उसे समृद्ध बनाने में और उसमें विविध विषयों पर रचनाओं के भंडार से। यह लघु काव्य हिन्दी साहित्य को एक अनूठी देन है क्योंकि यह अत्यंत विशिष्ट विषय पर केन्द्रित है और करोड़ों लोगों की भावनाओं को स्वर देता है। साथ ही उस महान आविष्कार को रेखांकित करता है जो मानव सभ्यता के 10 महानतम आविष्कारों में गिना जा सकता है। विश्व की किसी अन्य भाषा में लुई ब्रेल अथवा ब्रेल लिपि पर कोई विशिष्ट काव्य रचा गया या नहीं, इस बात का ज्ञान तो मुझे नहीं है किन्तु हिन्दी में ऐसा काव्य रचा गया - इस बात पर हिन्दी भाषी होने के नाते मुझे निश्चय ही गर्व है। इस संग्रह का हिन्दी काव्य प्रेमी पूरे मन से स्वागत करेंगे, ऐसी कामना है।

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी
के. 210 सरोजिनी नगर,
नई दिल्ली- 110023

अनुक्रम

शीर्षक	पृष्ठ
डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'	
लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में	1
डॉ. विनय विश्वास	
लुई ब्रेल को एक श्रद्धांजलि	4
महेन्द्र शर्मा	
तुम किसी देवता से कम नहीं	7
तालेवर 'मधुकर'	
अनुभूति (गीत)	10
वरदान (कविता)	11
कोहेनूर कर दिया (ग़जल)	13
डॉ. (श्रीमती) प्रेम सिंह	
छुअन	14
किरणें	15
डॉ. रामावतार शर्मा	
दोहे	16

डॉ. दयाल सिंह पंवार
लुई वन्दना 20

डा. कुसुम लता
अनुपम वरदान 22

डॉ. सुभाष रुपेला
संजीवनी ब्रेल लिपि 24
ब्रेल लिपि मात्र लिपि नहीं 25

ठाकुर विश्वनारायण सिंह
शत-शत नमस्कार 27

महेश प्रसाद उमराव
दोहे 29

अनिता मौर्या
उद्धारक 33

अब्दुल मजीद
सलाम (गीत) 35

डॉ. श्यामजी श्रीवास्तव
लिपि निर्माता 36

वी. जगन्नाथ
आलोकपुंज 39

राजेश कोरी
राह दिखा दी 41

संतोष कृपलाणी
लुई ब्रेल 44

सुशीला रावत
प्रकाश पुंज 46

अपरिचिता सरस्वती गुरुनानी
अमर जीवनदाता 48

मो. इरफान
ब्रेल गीत 50

ए.एम. राठोड़
लुई ब्रेल श्रद्धांजलि 51

डॉ. गिरीश कुमार श्रीवास्तव
कुण्डलियाँ 53

राधेश्याम पानवरिया 'पागल इंदौरी'
ब्रेल गीत 54

योगेश कुमार शुक्ल
लुई महान 56

वीणा कपूर
महानायक लुई-ब्रेल 59

काव्य-रचनाएं

डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में

जहाँ अंधेरा सिर्फ अंधेरा रहता था।
जिनसे कोसों दूर सवेरा रहता था।
स्वर्णदीप थे किन्तु स्नेह का वर्जन था।
प्रज्ञाचक्षु राव-राजा अति निर्धन था।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
बिलकुल नया प्रकाश अंधेरी दुनिया में।

कौन भगीरथ फिर भू पर गंगा लाया।
किसने दे दी जेठ-दुपहरी को छाया।
बुझी मशालें फिर से कौन जला पाया।
कौन उंगलियों में पारस लेकर आया।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
पतझर का मधुमास अंधेरी दुनिया में।

कौन स्पर्श से सच की गीता बाँच गया।
बंद नयन से सच्चा हीरा जाँच गया।
होमर, मिल्टन, सूरदास को स्वर बाँटे।
किसने विरजानन्दी पथ के शर छाँटे।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
हैं गृहस्थ संन्यास अंधेरी दुनिया में।

किस पाणिनी ने नया व्याकरण लिख डाला।
किसने सदियों जंग लगा खोला ताला।
किसने मौन-मूक पीड़ा को वाणी दी।
बंजर को फिर सरस्वती कल्याणी दी।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
सूरज बारह मास अंधेरी दुनिया में।

किसने मजबूरी को भी मजबूर किया।
किसने छूकर माटी को सिंदूर किया।
किसने घायल पंछी को पाँखें दे दीं।
दृष्टिबाधितों को सतर्क आँखें दे दीं।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
प्रत्यय संग समास अंधेरी दुनिया में।

किसने कुंद कंठ को स्वर-संग्राम दिया।
किसने हर हारे नर को हरिनाम दिया।
कौन क्षयी होकर संजीवन बाँट गया।
होकर लहुलुहान शूल सब छाँट गया।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
मरहम खासमखास अंधेरी दुनिया में।

कौन असम्भव के सिर पगड़ी बाँध गया।
प्रज्ञा-मेधाओं का आटा साँध गया।
काल-कपाल कीर्ति का कलश उलाँघ गया।
एक साँस में सात समन्दर लाँघ गया।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
अद्‌भुत मुक्ति-प्रयास अंधेरी दुनिया में।

कौन तपा तो कंचन कुंदन बन पाया।
कौन जला तो मरुथल नन्दन बन पाया।
किसने क्षर-क्षारों को अक्षर दान दिया।
कौन 'मनीषी' जिसने वर वरदान दिया।

लुई ब्रेल हैं खास अंधेरी दुनिया में।
दीपों का उल्लास अंधेरी दुनिया में ।
अनायास सायास अंधेरी दुनिया में।
अमृत का आकाश अंधेरी दुनिया में।

रीडर (हिन्दी विभाग),
रामलाल आनंद कॉलिज (सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मो. 09810835335
फोन. 011 - 27572897, 47553063

डॉ. विनय विश्वास

लुई ब्रेल को एक श्रद्धांजलि

मैं जन्म से नेत्रहीन हूँ लुई ब्रेल
रोशनी और रंग मेरे लिए व्यर्थ हैं
पर मैंने बचपन में ही देख लिया कि हम नेत्रहीन
दूसरों से अलग हैं, असमर्थ हैं वर दो मानस-पिता
कि हिम्मत का उजाला वर सकूँ
और मैं भी कुछ कर सकूँ!

तुम्हारा बचपन
बड़प्पन के अंधरे में खो गया था
तीन साल की उम्र में
तुम्हारी आँखों का सूर्य अस्त हो गया था
फिर भी आत्मनिर्भरता के द्वार खोल लेते थे
छह-सात साल के होते-होते
छड़ी से अपने रास्ते खुद टटोल लेते थे
तुमने ठोकरें और चोटें खाईं कड़ी
पर चलने लायक रास्ता
सर उठाकर हमेशा देखती रही तुम्हारी छड़ी
अंधेरे के सामने तुम कभी नहीं झुके
तुम्हें ऐसे चलना आया
ऐसे चलना आया कि फिर कभी नहीं रुके

तुम्हारे साथी जब रात को सोते
तो तुम मोटे कागज़ पर

तरह-तरह के बिन्दु उकेरने में लगे होते
इस तरह तुमने ब्रेल लिपि के मूल आधार
छह बिन्दु बनाए
मैं जब दुनिया में आया ही नहीं था
तब तुमने मेरे लिए
कभी न छिपने वाले छह-छह सूरज उगाए

प्रेम और विवाह नहीं किया
यौवन को नया अर्थ दिया
निपट अंधकार को
भरपूर उजाले से भर दिया था
और सोलह साल की उम्र में नेत्रहीनों की
अपनी वर्णमाला का आविष्कार कर दिया था।

तुम्हारे दिये उजाले की छड़ी थामकर
आज मैं आगे बढ़ता हूँ
अपने आप लिखता हूँ, पढ़ता हूँ
घड़ी में समय देखना जानता हूँ
मानचित्रों से देश-विदेश पहचानता हूँ
गणित के चिह्न लिख-पढ़ पाता हूँ
संगीत की स्वरलिपियाँ आँखों में बसाता हूँ
बोरियत के अंधेरे को
आसानी से परे धकेलता हूँ
और यह तुम्हारा ही दिया उजाला है
जिसमें ताश और शतरंज खेलता हूँ।

तुम जो पैसे
बड़ी मुश्किल से बचाते थे

उनसे ब्रेल की किताबें लिखवाते थे
खुद को इस तरह
मनुष्यता की रोशनी से जोड़ दिया था
कि दूसरे को आजीविका मिल जाए
इसके लिए खुद चर्च में आर्गन बजाना छोड़ दिया था
तुम देख लेते थे निर्धन अंधकार की लाचारी
तुम्हारे भीतर आँखें थीं कितनी सारी।

वर दो कि उनकी रोशनी की एक किरण मुझे भी मिल जाए
मेरा होना भी खिल जाए
वर दो मानस-पिता
कि हिम्मत का उजाला वर सकूँ
और मैं भी कुछ कर सकूँ।

बी-7/155, सैक्टर-4,
रोहिणी, दिल्ली-110085
मो. 09868267531

महेन्द्र शर्मा

तुम किसी देवता से कम नहीं

कोई सहमत हो या न हो
इस बात का मुझे
कोई गम नहीं
क्योंकि लुई ब्रेल
तुम किसी देवता से कम नहीं।

लोग जीवन भर
कमाते हैं और
खाली हाथ दुनिया से
लौट जाते हैं,
मगर जो दीन-दुखियों
के लिए जूझता है,
यह संसार उसे ही तो पूजता है।

हे मानव-कल्याण के पर्याय
दृष्टिहीनों के हित के
स्वर्णिम अध्याय,
तुमने संसार की
एक झलक तो पाई
पर इसे दुर्भाग्य
कहें या नियति
कि बचपन में ही तुमने
अपनी नेत्र-ज्योति गँवाई।

जीवन में तुम
हारना नहीं चाहते थे,
न ही चाहते थे
कि कोई दृष्टिहीन
जिंदगी काटे किसी के सहारे
इसलिए उनकी आँखों में
भरने के लिए उजियारे
तुम्हारी आत्मा
अवश्य छटपटाई होगी,
तभी तो लक्ष्य भेदने के लिए
तुम्हारे भीतर
अर्जुन की दृष्टि उतर आयी होगी।

साहस को जीवन-पथ
का सारथी बना
तुम उतर गए संघर्षों के संग्राम में
वह सारथी कोई और नहीं
शायद स्वयं श्रीकृष्ण ही थे,
जिन्होंने तुम्हें गले लगा लिया
और कर्म का सच्चा उपदेश दिया।

वैसे तो गीता का उपदेश लोग सुनते हैं
मगर जीते नहीं।
तुमने उसे सच्चे अर्थों में जिया,
वर्तमान में रहे, भुतकाल भूला दिया।
भूतकाल में अगर जीते
तो कुछ नहीं कर पाते,
आँखों में उज्ज्वल भविष्य के सपने नहीं,
सिर्फ आँसू रह जाते।

किसी की कृपा पर
जीने के बजाय
दृष्टिहीनों को नयी दृष्टि देने के लिए
तुम उतर गये
आविष्कारों के महासागर में।
ढूँढ़ लाए वह पद्धति
जिसने असम्भव को सम्भव कर दिया,
और इस 'लुई ब्रेल पद्धति' ने
दृष्टिहीनों का पथ
ज्ञान के आलोक से भर दिया।

हे प्रकाशपुंज!
तुम किसी एक देश के नहीं,
न ही किसी एक धर्म के,
न ही किसी जाति विशेष के,
तुम तो हो समूचे मानव-परिवेश के।
जब तक सृष्टि रहेगी
सभी की दृष्टि में तुम्हारी दृष्टि रहेगी।

आर.जैड.-617/6, गली नं.-8,
कैलाश पुरी, पालम कॉलोनी,
नई दिल्ली-110045
मो. 09868153592
011-64522033

तालेवर 'मधुकर'

1

अनुभूति (गीत)

उभरे अक्षर छूकर पढ़ना अच्छा लगता है,
धीरे-धीरे आगे बढ़ना अच्छा लगता है।

उंगली का स्पर्श चेतना में जादू भरता,
शब्द-विधान नये अर्थो का चमत्कार करता,
भाव और भाषा की सूरत मन में बस जाती,
जीने की सुकुमार कल्पना खुलकर हँस जाती,
सफल प्रेम का दर्शन गढ़ना अच्छा लगता है।
उभरे अक्षर छूकर पढ़ना अच्छा लगता है।

राजनीति, भूगोल और इतिहास जान लेता,
धर्म-ग्रंथ को बाँच सत्य का मर्म ज्ञान लेता,
कला और विज्ञान सूचनातंत्र निराला है,
ब्रेल लिपि ने दृष्टिहीन का भाग्य संभाला है,
चुनौतियों के पर्वत चढ़ना अच्छा लगता है,
उभरे अक्षर छूकर पढ़ना अच्छा लगता है।

तोड़ रूढ़ियों की बेड़ी आज़ाद हो रहे हम,
नव विकास की बस्ती में आबाद हो रहे हम,
अध्यापक, वकील, अधिकारी, कवि की महिमा देख,

खुशहाली का तो रहस्य भाई केवल है एक,
मजबूरी से हरदम लड़ना अच्छा लगता है,
उभरे अक्षर छूकर पढ़ना अच्छा लगता है।

कर्म-भूमि में ब्रेल लिपि का अस्त्र हाथ अपने,
लुई मसीहा का अक्षय वरदान साथ अपने,
विडम्बनाओं का सागर अब पार करेंगे हम,
घूँट-घूँट विष पीने से इन्कार करेंगे हम,
सूखे आदर्शों का झड़ना अच्छा लगता है,
उभरे अक्षर छूकर पढ़ना अच्छा लगता है।

2

वरदान (कविता)

लुई तुम्हारी ब्रेल लिपि ने ऐसा अक्षर ज्ञान दिया,
दया माँगते दृष्टिहीन को जीने का सम्मान दिया।

शब्दों को आकार दिया और अर्थों को विस्तार दिया,
नयी चेतना संघर्षों का मन में रूप उभार दिया,
चलो पाठशाला में पढ़ने खोल ज्ञान की पुस्तक को,
स्वाभिमान से उन्नत कर लो झुके हुए तुम मस्तक को,
सिर्फ बाईबिल नहीं उकेरी, गीता और कुरान दिया,
लुई तुम्हारी ब्रेल लिपि ने ऐसा अक्षर ज्ञान दिया।

छुआ बिन्दु जब एक एकता मन में जागी,
बिन्दु दूसरा छुआ दुखों की दुनिया त्यागी,
बिन्दु तीसरा छूते ही विश्वास आ गया,
चौथा बिन्दु छुआ मन में मधुमास छा गया,
बिन्दु पाँचवाँ 'पंचतत्त्व' का अर्थ दे गया,
छठा बिन्दु कर्मठता की सामर्थ्य दे गया,
बिन्दु-बिन्दु से भव्य ज्ञान-रत्नाकर जागा,
परवशता का अंधकार घबराकर भागा,
हलचल भर दी अंग-अंग में सतत क्रान्ति तूफान दिया,
लुई तुम्हारी ब्रेल लिपि ने ऐसा अक्षर ज्ञान दिया।

मात्र पद्धति नहीं ब्रेल लिपि दिव्य ज्योति है दीवानी,
सारे जग के दृष्टिबाधितों की काया अब मुस्कानी,
आभा के माथे की बिन्दिया नूतन का मोहक सपना,
आशा के होठों की लाली, गरिमा की चूनर धानी,
चाहे तुम मानो, मत मानो, पर मेरा तो यह मत है,
धारण करना होगा हमको लुई मसीहा का व्रत है,
मेरी मधुर कलम को प्रतिपल नव-विचार उत्थान दिया,
लुई तुम्हारी ब्रेल लिपि ने ऐसा अक्षर ज्ञान दिया।

3

कोहेनूर कर दिया (ग़जल)

ग़म का अंधेरा जिन्दगी से दूर कर दिया,
बेनूर मेरी आँख को पुरनूर कर दिया।

अदना-सा फसाना था कोई जानता न था,
सारे जहाँ में ब्रेल ने मशहूर कर दिया।

पा जाएँगे मंजिल, यही आता नज़र मुझे,
उम्मीद का उजाला-सा भरपूर कर दिया।

हालात के पत्थर ही तोड़ते हैं रात-दिन,
मेहनत के हुनर ने हमें मजदूर कर दिया।

दिल में कुछ इस तरह से जगी दर्द की कसक,
लिखने के लिए वक्त ने मजबूर कर दिया।

अपने वतन की शान बढ़ाओ जहान में,
ये हौसला भी पैदा तो ज़रूर कर दिया।

छह बिन्दुओं का चूमके चमका नसीब खूब,
'मधुकर' को लुई तूने 'कोहेनूर' कर दिया।

म.न. 363 (रविदास मंदिर के निकट),
कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016
मो. 09891330521

डॉ. (श्रीमती) प्रेम सिंह

1

छुअन

छुई है धूप भी, और छुआ है फूल भी,
छुई है चाँदनी भी, और छुआ है शूल भी,
पर मेरी उँगलियों पर
न धूल के निशान हैं, न चाँदनी के।
न फूल के निशान हैं, न शूल के।
पर छुई है जब से ब्रेल!
ये छह नुक्ते
मेरी उँगलियों पर छप गये हैं।
जैसे पढ़ने से चमक जाती हैं आँखें,
वैसे ब्रेल पढ़ने से मेरे हाथ स्वर्णिम हो गये हैं।
एक-एक नुक्ता जैसे
एक-एक शास्त्र हो गया हो
सबके साथ मैं भी
कदम-से-कदम मिलाकर
चल रही हूँ।
सिर गर्व से ऊँचा हो गया है।
शत-शत नमन है
मेरे लुई!
तुझे शत-शत नमन है।

2

किरणें

तुमने प्रकाश में आँखें खोली थीं लुई!
अंधकार कैसे सह सकते थे?
जाने कैसा जादू सिर चढ़कर बोला,
कि उँगलियों में आँखें भर दीं,
अंग परिवर्तन और किसे कहते हैं?
लुई ये कैसी मसीहाई पाई,
कि सबकी उँगलियों में दीप जल उठे,
किरणें काग़ज पर फैल जाती हैं,
पोर तपाक-से चुन लेते हैं,
कद बड़ा हो जाता है हमारा।
तुम दिव्य लोक से इशारा करते हो,
हम सरपट दौड़ लगाते हैं,
सम्पूर्ण विश्व में कोई ,
दृष्टिबाधित नहीं रहता।
धन्य हो लुई, तुम धन्य हो।

हिन्दी विभाग, कला संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
फोन. 11-25072767

डॉ. रामावतार शर्मा

दोहे

वीणापाणि शारदे! मैं नत शिर, तू जाग।
बाधित दृष्टि जगत हित, लुई दिए धनभाग॥

सर्वविदित भावी प्रबल, अमिट नियति के लेख।
बाधा सागर में खिंची, लुई कर्म की रेख॥

उथल-पुथल थी फ्रांस में, लुई जन्मे जिस काल।
विरुद्ध सोलहवें लुई के, उमड़ा युद्ध कराल॥

उऋण न दोनों से कभी, हो सकता इतिहास।
बाधित दृष्टि जगत का, हर्ष और उल्लास॥

लिपि न कभी कुछ बोलती, रोमन हो या ब्रेल।
अक्षर को आकार दे, करे बिन्दु का मेल॥

ब्रेल मात्र लिपि ही नहीं, दृष्टिहीन के हेत।
सामाजिक पहचान है, जिसने दिया निकेत॥

दृष्टिहीन के साथ हैं, घुटन और संत्रास।
किन्तु कराती ब्रेल है, जीने का अहसास॥

आन्दोलन है, क्रान्ति है, ब्रेल है एक विचार।
एक दृष्टि इक सोच है, जीवन का आधार॥

बरस पाँच-दस शोध कर, करते रहे सुधार।
ब्रेल वर्णमाला बना, दिया बिन्दु संसार॥

उच्चारण लेखन, पठन और वर्तनी ज्ञान।
बिना ब्रेल संभव नहीं, शुद्ध शब्द पहचान॥

मिट न सके बिन ब्रेल के, खुद पढ़ने की भूख,
बिन सींचे जैसे सदा, क्यारी जाती सूख॥

श्रवण सुखद है सत्य पर, बाधित अर्थ विचार।
बिना पढ़े मिलता कहाँ, शुद्ध शब्द का सार॥

अक्षर को आकार दे, भाषा को दे देह।
प्राणवान जीवन बना, ब्रेल दे गई गेह॥

लिफ्टों-भवनों पर चिपक, रहे ब्रेल के अंक।
सुविधाओं के खिल गये, मन में मोद मयंक॥

दूरभाष ये दूरियाँ, मिटा रहा दिन-रात।
किन्तु ब्रेल से हो रही, खुद से खुद की बात॥

संकल्पों की देह में, रहा प्राण का वास।
कर्मवीर लुई ब्रेल ने बदल दिया इतिहास॥

श्रमबल धनबल बुद्धिबल, सदा समर्पित ज्ञान।
पर सेवा पथ पर चला, लुई सहज धर ध्यान॥

प्रथा तोड़ना दंड की, मौलिक रहा विचार।
अनाचार टूटा हुआ, सतत छात्र उद्धार॥

दीप लुई जो जल रहा, जलता रहे अनन्त।
जलना जीवन चिह्न है, यही तमस का अंत॥

बाधित दृष्टि जगत में, पल-पल नवल विकास।
आँख बनी उंगली पढ़े, अब अद्‌भुत इतिहास॥

संबल पाकर ब्रेल का, बढ़े आत्म विश्वास।
जीवन का कुछ अर्थ है, हो जाता अहसास॥

संकट में सिकुड़ा नहीं, करता बाधा पार।
लुई विपत्ती में बढ़ा, ले जीवन पतवार॥

लुई जीवन की लघु कथा, गहरी अधिक अनंत।
खोज उजाला कर गयी, अंधकार का अंत॥

कालकूट पीते रहे, जनहित जीवन हेत।
लुई ऐसे थे सूरमा, जो न छोड़ते खेत॥

जीवित जब तक जगत में, शिक्षित दृष्टिविहीन।
तब तक छवि लुई ब्रेल की, होगी नहीं मलीन॥

संघर्षों ने लुई से, जब-जब किया सवाल।
कर्म पीठ पर भाग्य भी,चढ़ आया तत्काल॥

जहाँ आस्था शक्ति है, वहाँ हार भी जीत।
बना भक्त लुई ने लिया, जीवन को संगीत॥

काल प्रश्न लेकर खड़ा, अपने युग से मौन।
महापुरुष के काम को, पूर्ण करेगा कौन॥

दृष्टिहीन के सामने, है यह ठोस विचार।
नूतन कुछ करता रहे, हो ऋण से उद्धार॥

महापुरुष मरते तभी, मरता जब अहसास।
जीवन में जीते सदा, हो अटूट विश्वास॥

रीडर (हिन्दी विभाग),
रामलाल आनंद कॉलिज (सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मो. 09868278242

डॉ. दयाल सिंह पंवार

लुई वन्दना

दृष्टिबाधित वर्ग को नव दृष्टि दे,
तुमने किया इस वर्ग का उद्धार है;
ऐ लुई। हम हो नहीं सकते उऋण,
निज वन्दना तुमको सहस्त्रों बार है।

जिनको समाज कभी न था स्वीकारता,
अभिशाप जिनको सर्वदा था मानता;
रूढ़ियों से वह स्वयं जकड़ा हुआ,
सर्वथा अक्षम जिन्हें था जानता।
उस तिमिर से परिपूर्ण काली रात में,
प्रात का तुमने किया संचार है;
ऐ लुई। हम हो नहीं सकते उऋण,
निज वन्दना तुमको सहस्त्रों बार है।

है स्तुत्य तेरा बुद्धि-कौशल ऐ लुई।
छह बिन्दुओं में सिंधु सारा भर दिया;
धन्य, जिसने ब्रेल का वरदान दे,
दुर्लभ रहा जो सब सुलभ वह कर दिया।
बन्द था जो दृष्टिहीनों के लिए,
खुल गया वह ज्ञान का हर द्वार है;
ऐ लुई! हम हो नहीं सकते उऋण,
निज वन्दना तुमको सहस्त्रों बार है।

जब-जब करेंगे ब्रेल में हम अध्ययन,
तब-तब वही होगी तुम्हारी अर्चना;
छन्द मेरे हैं नहीं सक्षम अहो!
किस तरह तेरी करें ये वन्दना।
है लुई तू ब्रेल के हर बिन्दु में
हर बिन्दु तेरी कीर्ति का आगार है;
ऐ लुई। हम हो नहीं सकते उऋण,
निज वन्दना तुमको सहस्रों बार है।

प्रगति का संदेश लाई है लुई!
तव जन्मतिथि हम दृष्टिहीनों के लिए;
है शक्ति कोई भी नहीं संसार में,
बाधा बने औ प्रगति को निज रोक दे।
ब्रेल-लिपि वरदान तेरा बन गया,
दृष्टिहीनों का प्रगति आधार है;
ऐ लुई! हम हो नहीं सकते उऋण,
निज वन्दना तुमको सहस्रों बार है।

व्याख्याता (व्याकरण विभाग),
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली -110016
मो. 09868940607

डॉ. कुसुम लता

अनुपम वरदान

छह छह सूरज गढ़ नव प्रकाश का संधान किया,
हे लुई! ब्रेल का तुमने अनुपम वरदान दिया।

मान-सम्मान अधिकारहीन जन को
रूप रेख आकारहीन मन को
दलित दमित जड़ित अंधकारमय चेतन को
प्यासे पंगु पर-हीन पाषाण रूप जीवन को
दे छत्र सिंहासन मानवता का मान किया
हे लुई! ब्रेल का तुमने अनुपम वरदान दिया।
जो धरती पर थे बोझ
अवतार बन गए
जीवन उष्मा से हीन-दीन
अंगार बन गए
अन्धे, गूंगे, बहरे
वाणी का संचार बन गए
अनाथ तिरस्कृत बहिष्कृत जन
मंदिर का श्रृंगार बन गए
अपमान विष को पीने वाले
जीवन रस के करतार बन गए
निर्जन बंजर भू को तुमने
सृजन का सम्मान दिया
हे लुई! ब्रेल का तुमने अनुपम वरदान दिया,

छह बिन्दु प्रकाश का पुरस्कार हो गए
ब्रेल पठन पाठन से हाथ
जीवन का उपहार हो गए
बीच भंवर में फंसे हुए जन
नियति चक्र से कसे हुए मन
ब्रेल लिपि की नाव से सागर पार हो गए,
अनजान अनाम निरर्थकता को
स्वर्णिम उत्थान दिया
हे लुई! ब्रेल का तुमने अनुपम वरदान दिया।

गणित ब्रेल में विज्ञान ब्रेल में
साहित्य ब्रेल में अनुसंधान ब्रेल में
इतिहास श्रृंखला वृद्धि में हम
जोड़े नूतन ज्ञान
कम्प्यूटर तकनीक से भी
करें ब्रेल संधान
पृथ्वी के गौरव की,
बने ब्रेल पहचान
सप्तऋषि मंडल से ऊपर
जाये यह वरदान
जला स्वयं को
ज्योति को नवोन्मान दिया
हे लुई ब्रेल का तुमने अनुपम वरदान दिया।

वरिष्ठ प्राध्यापिका (हिन्दी विभाग),
किरोड़ीमल कॉलिज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मो. 09968295282

डॉ. सुभाष रुपेला

1

संजीवनी ब्रेल लिपि

लिपि हूँ लिपि मैं ब्रेल लिपि हूँ।
सब कुछ लिखती स्याही के बिना मैं,
अँधेरे में भी मुझ को पढ़ते सभी हैं,
फ्रांस में जन्मी मैं, इंगलैंड में पली मैं,
अमेरिका में खेली मैं, भारत में रमी मैं।
जापानी हो या फारसी गले सबके लगी मैं..
लिपि हूँ लिपि मैं फोनेटिक लिपि हूँ।

रोमन, फारसी, देवनागरी..
जैसी मेरी बहनें बड़ी हैं,
वे दृश्य हैं, मैं स्पृश्य हूँ,
वे तो प्रकाश की ही सहचरी हैं,
मैं तिमिर की भी सहचरी हूँ,
मैं छोटी पर तेज बहन हूँ,
लिपि हूँ लिपि मैं ब्रेल लिपि हूँ।

सैनिक छावनी में जन्मी थी मैं,
गुप्त संदेश ले जाती थी मैं,
लुई से मिली, तो लुई की हुई मैं,
मानो श्रीमती ब्रेल बन गई मैं।
दिवाली लेकर मैं आई हूँ,
लिपि हूँ लिपि मैं ब्रेल लिपि हूँ।

श्रृंगार मेरा सबसे खा,
झाँके मुझ क्को सारोखा,
छः बिंदियाँ लगातीमैं,
त्रेसठ अदाएं दिखहूँ मैं,
छुई-मुई-सी कुम्हो नहीं हूँ,
लिपि हूँ लिपि मैं लिपि हूँ।

मुरझाए होठों पर मान लाई मैं, मैं,
पतझड़ गयाा वसंत मैं,
विराने में रौनक ला मैं,
मुर्दे में जान लाई हूँ
संजीवनी बानकर मैं हूँ,
लिपि हूँ लिपि मैं लिपि हूँ।

2

ब्रेल लि मात्र लिलिपि नहीं

कौन कहता है कि
ब्रेल लिपि मात्र एक पि है ?
यह तो एक सूर्य है
अति उज्ज्वल स्वप्रभास्वर।
इस सूर्य के आलोक
पादप समाना नेत्रहीन
करके अपनाा विकास
फल-फूलों से लदे
जन-मन को करते हर्षित।

कौन कहता है कि
ब्रेल लिपि मात्र एक लिपि है?
यह तो प्राण वायु है,
जिस में साँस लेकर
जिंदा हैं नेत्रहीन
बनकर प्रतिष्ठित नागरिक।

कौन कहता है कि
ब्रेल लिपि मात्र एक लिपि है?
यह तो कल्पवृक्ष है
लगे हैं शिक्षा के पत्ते जिसपर,
खिले हैं मनोरंजन के फूल जिसपर,
लटके हैं रोजगार के फल जिसपर,
जिसे जो चाहिए
उसे वह देता है कल्पवृक्ष।

कौन कहता है कि
ब्रेल लिपि मात्र एक लिपि है?
यह है एक अमूल्य उपहार,
है लुई ने जिसे जगत को दिया
करके तप सहकर हिम-ताप,
व्यय बढ़ा पर न घटा धन,
पाकर ऐसा अक्षय धन,
होते रहेंगे सदा संपन्न,
अखिल भुवन के नेत्रहीन।

रीडर (हिन्दी विभाग),
ज़ाकिर हुसैन कॉलिज (सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मो. 09868092515

ठाकुर विश्वनारायण सिंह

शत-शत नमस्कार

लुई ब्रेल तुम्हें नमस्कार
दृष्टिबाधिता से जब पार पाना
नहीं था कोई हँसी खेल,
तब दृष्टिबाधितार्थ के
हितार्थ जन्म लिया था
तुमने
लुई ब्रेल!

अपनी स्वयं की आँखें
गँवाकर
वर्षों की साधना में
तुमने
छह बिन्दुओं की
स्पर्श लिपि का
किया था
आविष्कार
कितना विराट था
यह चमत्कार!

आज यह लिपि तुम्हारे ही नाम पर
प्रचलित हो रही
विश्व भर में
करती तुम्हारी
जय-जयकार!

पुस्तकें छपीं इस लिपि में
पत्रिकाएँ छपीं इसमें
बारम्बार
लुई ब्रेल तुम्हें
शत-शत नमस्कार!

डी.- 183 ग्राउण्ड फ्लोर,
नर्मदा अपार्टमेंट,
अलकनंदा, नई दिल्ली-110019

महेश प्रसाद उमराव

दोहे

सुमति मुझे दो शारदे। और नित्य नव ज्ञान।
लुई ब्रेल की जीवनी, सुनो सभी धर ध्यान॥

बिन्दु मिलाकर मात्र छह, रच ली लिपि ब्रेल।
धन्य धरा को कर गये, सचमुच लुई ब्रेल॥

दृष्टिबाधितों का हुआ, इस लिपि से कल्याण।
मानों मृतकों को मिले, फिर से नूतन प्राण॥

फ्रांस देश पेरिस नगर, वहाँ कूरे ग्राम।
लुई ब्रेल जन्में जहाँ, जीन साज के धाम॥

सन् अष्टादश नवम् में, माह जनवरी चार।
लुई जन्म का दिवस है, पावन परम अपार॥

पित्र कार्य की कर रहा, नकल निरा नादान।
वाम नेत्र में जा लगा, चाकू तीर समान॥

घाव अधिक गम्भीर था, व्यर्थ रहा उपचार।
दृष्टि गयी सब नेत्र की, लुई हुए लाचार॥

पाँच वर्ष की आयु में, लुई गये स्कूल।
दृष्टिवान स्कूल में, दृष्टि-विकलता भूल॥

प्राथमिक शिक्षा पूर्ण की, अपने ही उस ग्राम।
लुई हुए दस वर्ष के, मिला तभी पैगाम॥

फ्रेंच सैन्य आर्टीलरी, के कैप्टन थे एक।
चार्ल्स बारबिये व्यक्ति ने, खोजी थी लिपि एक॥

यह लिपि बारह बिन्दु की, लेकर लेखन यन्त्र।
चार्ल्स प्रदर्शन हेतु तब, पहुँचे संस्था तन्त्र॥

चार्ल्स बारबिये के ऋणी, भी हैं लोचनहीन।
जिनसे प्रेरित लुई ने, यह लिपि रची नवीन॥

रॉयल इंस्टीट्यूट में, दृष्टिहीन थे छात्र।
पढ़ते कतिपय विषय वे, स्मरण शक्ति से मात्र॥

पढ़ें-लिखें किस भाँति सब, साथी लोचनहीन।
लुई ब्रेल यह सोचकर, हुए खोज में लीन॥

रचते बारह बिन्दु के, यदि अक्षर साकार।
अग्र भाग अंगुली तले, आ न सके आकार॥

लुई ब्रेल ने जो रचा, नया परिष्कृत मेल।
यह उनके ही नाम से, है प्रसिद्ध लिपि ब्रेल॥

लुई ब्रेल करते रहे, अपना सतत् प्रयास।
लेकिन उनके स्वास्थ्य का, हुआ अधिक था ह्रास॥

लुई ब्रेल के कार्य से, हुआ बहुत उपकार।
दृष्टिबाधितों के लिए, खुले प्रगति के द्वार॥

लुई ब्रेल की लिपि बनी, दृष्टिहीन का हर्ष।
मानों इससे मिल गया, जीवन का उत्कर्ष॥

बहुत हुए विज्ञान के, नित प्रति आविष्कार।
किन्तु ब्रेल लिपि-सा नहीं, उनका कुछ उपकार॥

पराधीनता त्यागकर, जाग उठे दृगहीन।
चले प्रगति के मार्ग पर, बजा बिगुल स्वाधीन॥

लुई ब्रेल को नमन है, मेरा बारम्बार।
व्यक्त किये कतिपय यहाँ, हृदय जनित उद्‌गार॥

लुई ब्रेल का लक्ष्य है, अभी अधूरा शेष।
कोटि-कोटि दृगहीन हैं, अनपढ़ पाते क्लेश॥

नेत्रहीन सब विश्व के, पढ़ते यह लिपि ब्रेल।
भाषाएँ सब लिख सकें, कैसा अद्‌भुत मेल॥

शिक्षित लोचनहीन का, यह कर्त्तव्य विशेष।
किसी विकल दृगहीन का , करे स्वयं उन्मेष॥

लुई जीवनी है बड़ी, लिखी बहुत संक्षेप।
पढ़कर इसको मित्रगण, मत करना आक्षेप॥

अपने मित्रों को जरा, करा सकूँ रसपान।
दोहा शैली में लिखा, लुई जीवनी ज्ञान॥

व्याख्याता (संस्कृत),
रा.उ.मा. अंधविद्यालय,
आदर्श नगर, अजमेर- 305001
मो. 09460065012

अनिता मौर्या

उद्धारक

भूला नहीं सकते हैं हम,
उस उद्दीप्त सवेरे को,
श्रम से अपने मिटा दिया,
जिसने गहन अंधेरे को,
ब्रेल लिपि का कर निर्माण,
जिसने किया अनूठा काम,
उस महानुभाव लुई को,
हम करते शत-शत प्रणाम।

चार जनवरी को हुआ धरा पर,
उस महापुरुष का आविर्भाव,
नेत्र-ज्योति खोकर भी जिसने,
त्यागा नहीं धैर्य का भाव,
निकला जिसके संघर्षों से,
हमारे लिए सुखद परिणाम,
उस महानुभाव लुई को,
हम करते शत-शत प्रणाम।

जिसका वर्णन करते-करते,
मन बार-बार हर्षाया है,
अक्षुण्ण ज्योति का उसने ही,
अद्‌भुत दीप जलाया है,
अतिशयोक्ति नहीं होगी,

अगर कहें हम उनको राम,
उस महानुभाव लुई को,
हम करते शत-शत प्रणाम।

हिन्दी सहायिका, मानव संसाधन विभाग,
नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड,
तालचर थर्मल,
जिला- अंगुल, उड़ीसा
मो. 09437290615

अब्दुल मजीद

सलाम (गीत)

लुई तुझे सलाम, लुई तुझे सलाम,
तूने बक्शा हम जैसों को जीवन का आयाम,
लुई तुझे सलाम, लुई तुझे सलाम।

सदियों से अज्ञान के अंधियारों में भटक रहे थे,
लोगों की आँखों में हम काँटों से खटक रहे थे,
हाथ की शक्ति उजागर करके बना दिया हर काम,
लुई तुझे सलाम, लुई तुझे सलाम।

छह बिन्दुओं के जादू से ही तूने बात बनाई,
ब्रेल की ज्योति जलाकर हम भटकों को राह दिखाई!
मार्ग ज्ञान का खोल दिया है जीने का पैगाम,
लुई तुझे सलाम, लुई तुझे सलाम।

है महिमा अत्यन्त अपरिमित तेरी ओ शहजादे!
किसके बस का है जो तेरी पूरी गाथा गा दे,
जब तक यह संसार चलेगा, रहेगा तेरा नाम,
लुई तुझे सलाम, लुई तुझे सलाम।

सी-12, अहिंसा मार्ग,
मनकनवाली रोड़, पंचशील योजना,
अजमेर, राजस्थान

डॉ. श्यामजी श्रीवास्तव

लिपि निर्माता

जय-जय, जय-जय लिपि-निर्माता,
नेत्रहीन के भाग्य विधाता;
अंधकूप से हमें निकाला,
हम सबको जीवन दे डाला;
कोटि-कोटि कष्टों को सहकर,
जग-हित तू अमृत दे डाला;
नमन तुम्हें शत वार हमारा,
नव जीवन के प्रेरक भ्राता।

अद्‌भुत तव वैज्ञानिक दृष्टि,
जिसने किया बिन्दु-लिपि-सृष्टि;
अंगुलियों के अग्र भाग से,
पढ़ लेता दृगहीन समष्टि।
छोटा बच्चा कहता जाता--
इक-चार, दो-पाँच, तीन-छह करता।

फ्रांस देश कूरे ग्राम में,
मध्य वर्ग के इक आँगन में;
चार जनवरी अतिपुण्य दिवस था,
अठारह सौ नौ को तू आया था।
बहुत प्रसन्न थे पुर-जन, परिजन,
भला, कहो, किसे शिशु ना भाता।

पिता करते चमड़े का काम,
चार वर्ष का था निष्काम;
औजारों से खेल रहा था,
'घायल नेत्र' - मचा कोहराम;
''मेरे लाल की ज्योति गई री''!
फूट पड़ी थी तेरी माता।

चर्म चक्षु का अंत हुआ, पर,
प्रतिभा तेरी प्रखर हुई,
अभिभावक की देख-रेख में,
अध्ययनशीलता बनी रही।
पढ़े-पढ़ाए पेरिस में तुम,
हुए ब्रेल लिपि के निर्माता।

आधि-व्याधि को सहते-सहते,
विरोधियों से लड़ते-लड़ते;
तूने परिवर्तित कर डाला,
देखा हमने-विश्व सम्हलते।
तैंतालीस की मात्र उम्र में,
कूच किया था तू तम-त्राता।

लगनशील था, कर्मनिष्ठ था,
जग-मंगल-हित दृढ़-प्रतिज्ञ था;
हम सबको ज्योत्स्ना दे गया,
ऐसा तू आलोकपुंज था।

''करो परिश्रम, भीख न माँगो!''
कहता है यह लुई भ्राता।
नेत्रहीन के भाग्य-विधाता,
जय-जय, जय-जय लिपिनिर्माता।

बी-4/72, एल.आई.जी. फ्लैट्स,
सैक्टर-18, रोहिणी, दिल्ली-110085
मो. 09868382822

वी. जगन्नाथ

आलोकपुंज

अंधकारमय इस जीवन के आलोकपुंज तुम हो,
छह बिन्दुओं में विद्यमान लुई तेरा शोध अमर हो;

चार जनवरी है पावन दिन,
अवतार हुआ लुई का इस दिन,
हे ब्रेल लिपि के निर्माता,
हम सबके ज्ञान-चक्षु तुम हो,
अंधकारमय इस जीवन के आलोकपुंज तुम हो।

कर ब्रेल लिपि का आविष्कार,
किया हम सबका तुमने उद्धार,
हे, तिमिर जगत के अभिहंता,
तुम ज्ञान पुंज हो, तुम ज्ञान पुंज हो,
अंधकारमय इस जीवन के आलोकपुंज तुम हो।

अब हाथ बने चक्षु अपने,
संग पूर्ण हुए सारे सपने,
हम दृष्टिहीन के मनवंता,
हम सबके सूत्रधार तुम हो,
अंधकारमय इस जीवन के आलोकपुंज तुम हो।

तुम रहो अमर
जब तक हों तारे, सूर्य, चन्द्र,

हे वीर पुत्र, हे वीर पुत्र,
हम सबके सकल कीर्ति तुम हो,
अंधकारमय इस जीवन के आलोकपुंज तुम हो।

करता हूँ वंदन मैं तेरा,
हो प्रकाशमय जीवन मेरा,
कृपा रहे हम सब पर तेरी,
हम सबके नवभविष्य तुम हो,

अंधकारमय इस जीवन के आलोकपुंज तुम हो,
छह बिन्दुओं में विद्यमान लुई तेरा शोध अमर हो।

द्वारा:
ऑल इंडिया कन्फैडरेशन ऑफ दि ब्लाइंड,
ब्रेल भवन, सैक्टर-5,
रोहिणी, दिल्ली-110085

राजेश कोरी

राह दिखा दी

पथ भूले थे राह दिखा दी,
अंधियारा था ज्योति दिखा दी।
जीना सार्थक अब लगता है,
खुली हवा है अब लगता है।
भूल नहीं सकते हैं तुमको,
दूर किया जीवन से तम को।
लुई तम्हारी ख्याति ऐसे,
नील गगन में चाँद हो जैसे।
चाँद के इस स्वर्णिम प्रकाश का
हाथ जोड़ वंदन करता हूँ,
लुई नमन तुमको करता हूँ।

हम बेबस लाचार थे ऐसे,
सुमन पड़े हों कुचले जैसे।
तुमने इनको सिंचित करके
नवपराग भर दिये हों जैसे।
सुरभित रहें सदा मुस्काएं,
नूतन लक्ष्य चुनें और पाएं।
बाधा ना हो मंजिल में,
लुई रहे सबके दिल में।
अरमानों के फूल सजाकर
लुई तुम्हें अर्पण करता हूँ,
लुई नमन तुमको करता हूँ।

संतोष कृपलाणी

लुई ब्रेल

पावन तुम पुनीत हो अवसर,
बढ़ते जाएं उन्नति पथ पर।
दृष्टिवान और दृष्टिबाधित,
रहें हर क्षेत्र में परस्पर॥

इसी भावना से लुई ने,
छह बिन्दुओं पर विचार किया।
ब्रेल-लिपि के आविष्कार से,
दृष्टिबाधितों का उद्धार किया।
पढ़-लिख कर सब बनें महान,
दृष्टिबाधितों का किया कल्याण।
केवल छह बिन्दुओं के माध्यम से,
जग में मिला सबको सम्मान।

धन्य हुआ हम सबका जीवन,
लुई की अति कृपा से,
ज्ञान का दीपक जलाकर उसने,
दूर किया एकाकीपन से,
करते हैं सब दृष्टिबाधित,
लुई ब्रेल का धन्यवाद।

सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक सब,
सब पहलुओं को ले किया आबाद,

आओ श्रद्धासुमन चढ़ाएं,
करते जाएं जय-जयकार,
कभी न भूलें उसकी मेहनत,
करते रहें हम सदा सत्कार।

506-507, बी.विंग,
अपना घर कोओपरेटिव हाउसिंग सोसायटी,
पिंप्रीपाडा, गोकुलधाम के निकट,
मलाड (पूर्वी), मुम्बई- 400097

अब कैसेट-सीडी का जमाना,
मगर ब्रेल को भूल न जाना।
साधन ये उपयोगी जानो,
मगर न इनको सब-कुछ मानो।
धरा है अपनी ब्रेल लिपि यह,
इनको ऊँचे पर्वत मानो,
बिना धरा के पर्वत का अब,
क्या अस्तित्व कहो दीवानो!
ब्रेल की जिससे रही दुश्मनी,
हिन्दी, इंग्लिश या हो जर्मनी,
क्या जाने वह शुद्ध वर्तनी।
ब्रेल मैं जब लिखता-पढ़ता हूँ,
लगता ज्यों पूजन करता हूँ,
लुई नमन तुमको करता हूँ।

जो ईश्वर अज्ञात हमारा,
हम उसका पूजन करते हैं,
ज्ञात ईश्वर लुई हमारा,
हम इससे बचते फिरते हैं।
दु:ख चट्टान काटकर जिसने,
सुगम सरल-सी राह बना दी,
बिन्दु-बिन्दु में सागर भरके,
एक नई खलबली मचा दी।
छह बिन्दु की नवल ज्योति ले,
जो पथ पर बढ़ता जाता है,
ऐसे सच्चे राही को मैं,

शीश झुका वंदन करता हूँ,
लुई नमन तुमको करता हूँ।

द्वारा- श्री.अलगूराम कोरी,
388, पी.डब्लू.डी. नर्सरी, पीटीएस,
मालवीय नगर, नई दिल्ली - 110017
मो. 09911880973

सुशीला रावत

प्रकाश पुंज

आज तुम्हारे जन्म-दिवस पर,
तुमको शत-शत बार नमन,
इस पावन पुनीत वेला में,
करती अर्पित शब्द सुमन।

अठारह सौ नौ में तुमने,
'कूरे' में जन्म लिया,
अपने गौरवमय कृतित्व से,
फ्रांस देश को धन्य किया,
फ्रांस ही क्यों, निखिल विश्व पर,
तुमने यह उपकार किया,
सकल दृष्टिहीनों के जग को,
'ब्रेल' का है उपहार दिया।
पाकर यह उपहार अनूठा,
है कृत-कृत्य हमारा मन,
इस पावन पुनीत वेला में,
करती अर्पित शब्द सुमन।

ब्रेल की ज्योति जलाकर तुमने,
किया दूर अज्ञान का डर।
अवनी का तम हरने के हित,
स्वयं जले बन सूर्य प्रखर,

जब तक जग में ब्रेल रहेगी,
रहे तुम्हारा नाम अमर।
दृष्टिहीनता के इतिहास में,
लुई चमके ज्यों स्वर्णाक्षर।
ओ प्रकाश के पुंज! तुम्हीं से,
हुआ दूर अंधकार सघन।
इस पावन पुनीत वेला में,
करती अर्पित शब्द-सुमन।

राजभाषा विभाग,
ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स,
ई-ब्लॉक, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

अपरिचिता सरस्वती गुरुनानी

अमर जीवनदाता

नेत्रहीन नर-नारियों का,
करने को कल्याण;
ले अवतार निभाया उसने,
गीता का वरदान,
नाम में रखा नहीं है कुछ भी,
कान्हा हो या लुई,
ब्रेल-दीप से दृष्टिहीन की,
दुनिया रोशन हुई;
फ्रांसिसी फरिश्ता अब,
है सारे जगांध का भगवान,
दृष्टिहीन की जगत में,
बदल रही पहचान।

ब्रेल लिपि ने प्रज्ञाचक्षु की,
प्रज्ञा को परिष्कारा है,
छह बिन्दुओं ने जग के करोड़ों,
बदनसीबों का भाग्य संवारा है;
सूरज बन प्रगति पथ पर,
प्रदर्शक बना है लुई महान,
दृष्टिहीन की जगत में,
बदल रही पहचान।

ब्रेल लिपि ने पारस बनकर,
कंचन किया है मुझको,
ब्रेल-स्पर्श ने अमृत बनकर,
जीवन दिया है सबको;
सदियों का तम दूर हो गया,
हमने छू लिया आसमान,
दृष्टिहीन की जगत में,
बदल रही पहचान।

ऋण उसका माना चुका न पाएंगे,
फिर भी हम ये वचन निभाएंगे;
प्रचार-प्रसार प्रगति से,
ब्रेल को विश्व-विख्यात बनाएंगे;
सार्थक होगा तभी मनाना,
द्विशती का अभियान!
दृष्टिहीन की जगत में,
बदल रही पहचान।

एल.-40,
स्वतंत्रता सेनानी नगर,
अखबार नगर के सामने, नवा वाडाज,
अहमदाबाद - 380013

मो. इरफान

ब्रेल गीत

आओ ब्रेल का जश्न मनाएं आज दिलो जान से,
जिसने निकाला है हमें काँटों के तूफान से।

क्या गुल खिलाया है लुई ने छह मोतियों की बहार से,
उंगलियाँ आँखें बन गयीं जुड़ गये हम संसार से।
धड़कन-धड़कन गा रही क्या खूब एतबार से,
बैठ दोस्तों की महफिल में बोल रहा ईमान से,
आओ ब्रेल का जश्न मनाएं आज दिलो जान से।

खिज़ाँ का मौसम गुजर गया हम लोगों के गुलजार से,
लुई मसीहा गुज़रा नहीं दूजा इस संसार से,
हम जो चाहें हासिल कर लें ब्रेल के दीदार से,
हमें सितारों तक पहुंचाया जिसने बड़े प्यार से,
उदास ज़िन्दगी को रोशन कर दिया, छह मोतियों की बहार से,
क्यों ना चाहें हम उसे ज्यादा अपनी जान से,
आओ ब्रेल का जश्न मनाएं आज दिलो जान से।

म. न. 60, माडल स्कूल के पीछे,
ताज कालोनी, शाहजहानाबाद,
भोपाल - 462001
मो. 09893963656

ए.एम. राठोड़

लुई ब्रेल श्रद्धांजलि

दृष्टिहीनों की खातिर बन के फरिश्ता आया,
अंधकारमय जीवन में लुई ब्रेल प्रकाश लाया।

ये दृष्टिहीन जीवन होता बड़ा कठिन है,
कठिनाइयों के आगे न कभी लुई ने सर झुकाया।
बस हाथ पर धरे हाथ बैठे थे अंधेरे में,
दिखलाया मार्ग लुई ने बन के मसीहा आया।

कुछ कर गुजरने वाली दिल में थी छटपटाहट,
कुछ कर सका न कोई लुई ने कर दिखाया,
दिया अमूल्य तोहफा लुई ब्रेल ने ब्रेल लिपि का,
दुनिया पलट के रख दी जैसे तूफान आया।

होते ही उंगलियों का स्पर्श मात्र क्या बताऊँ,
खुला ज्ञान का खजाना अनमोल ज्ञान पाया,
ऐसा ब्रेल लिपि के द्वारा हुआ सरल पढ़ना-लिखना,
पतझर गया जीवन में, अब तो बसन्त आया,
सारी रुकावटें, मुश्किलें, मुसीबतें सब,
रास्ते से हट गयीं, अब खुशियों का दौर आया।

प्रगति उन्नति के ऊँचे शिखर किये सर,
दृष्टिहीनों ने भी खूब दुनिया में नाम कमाया।
युगों के बाद भी तू लुई ब्रेल रहेगा कायम,
इस ब्रेल लिपि ने तुझको जग में अमर बनाया,

जब तक रहेगी दुनिया तुझे याद हम करेंगे,
भूले से भी कभी तू जाएगा न भुलाया।

बी-4, सुपन अपार्टमेंट
स्वस्तिक फ्लेट के पास
बेरेज रोड़, वासणा
अहमदाबाद - 380007

डॉ. गिरीश कुमार श्रीवास्तव

कुण्डलियाँ

तवागमन से ही हुआ हम सबका उद्धार,
न तो माँगते भीख हम, ठुकराता संसार;
ठुकराता संसार न जाने क्या-क्या कहता,
दृष्टिहीन हर व्यंग्य-बाण रो-रोकर सहता;
करते हैं हम आज अर्चना नाथ! सुमन से,
मिले हमें सुख सर्व प्रभो! बस तवागमन से।

कुल से होता है नहीं, कोई व्यक्ति महान,
सिद्ध कर दिया आपने, लुई ब्रेल-भगवान!
लुई ब्रेल भगवान फ्रांस वसुधा का वंदन,
करता है हर दृष्टिहीन तव पदअभ्यर्चन;
तव प्रताप से हुआ हमारा जीवन मंजुल,
वंदनीय है कूरे, मात-पिता और कुल।

दृष्टिहीनता का मिला, लघु जीवन में शाप,
किन्तु न वह कुछ कर सका, बंधु! आप थे आप;
बंधु आप थे आप, हमारे लिए आपने
किया अनोखा काम, बहाए अश्रु शाप ने;
हम सब हैं सामर्थ्यवान, अब कहाँ दीनता?
तव प्रसाद से क्लेश न देती दृष्टिहीनता।

प्रवक्ता (हिन्दी),
राजकीय इण्टर कॉलिज, कानपुर (नगर), उत्तर प्रदेश
मो. 09450140549

राधेश्याम पानवरिया 'पागल इंदौरी'

ब्रेल गीत

निराशामयी जग में, तुम आशा का संचार हो,
तम भरे इस जीवन में, लुई ज्योतित द्वार हो।

बिन्दु जो दिये हैं, ये दीये न बुझ सकेंगे,
रोशनी में इनकी सब अंध आगे बढ़ेंगे।
आलोक पूर्णिमासी हो तुम, ज्ञान का संचार हो॥
निराशामयी जग में, तुम आशा का संचार हो,
तम भरे इस जीवन में, लुई ज्योतित द्वार हो।

व्यर्थ समझता था जिन्हें सारा समुदाय,
अर्थवान किया उन्हें, क्या खूब किया उपाय।
खिज़ाँ से लड़ रहे चमन की तुम नयी बहार हो,
निराशामयी जग में, तुम आशा का संचार हो,
तम भरे इस जीवन में, लुई ज्योतित द्वार हो।

मुख-मण्डल से उठाकर, उंगली पे आँख धर दी,
स्पर्श घ्राण में अक्षि-सी शक्ति भर दी।
उर-अन्तर से जो फूटे मृदु सरि धार हो॥
निराशामयी जग में, तुम आशा का संचार हो,
तम भरे इस जीवन में, लुई ज्योतित द्वार हो।

सूरदासों को सुर-स्वामी कर दिया,
दर-बदर भटकते थे मंजिलों से भर दिया,

विश्वकर्मा हो सूरों के श्रेष्ठ कुम्भकार हो,
निराशामयी जग में, तुम आशा का संचार हो,
तम भरे इस जीवन में, लुई ज्योतित द्वार हो।

लुई तुम बने हो, नवजीवन के पर्याय,
मशाल जो जलाई, आँधी-तूफाँ क्या बुझाय,
'पागल' नि:शक्तों ने जो थामी, तुम वही पतवार हो,
निराशामयी जग में, तुम आशा का संचार हो।
तम भरे इस जीवन में, लुई ज्योतित द्वार हो॥

हिन्दी विभाग,
शास. स्नात्कोत्तर महाविद्यालय,
बरेली (रायसेन), मध्यप्रदेश
मो. 09425653940

योगेश कुमार शुक्ल

लुई महान

लुई हैं महान ऐसे, विधि का विधान जैसे,
हम सबके गुणों में उनका बयान है।
षट् बिन्दुओं के बल जीवन संवर गया,
आज सच पूछिये तो वही भगवान है॥

नियति की रचना थी, अद्भुत घटना थी,
लुई ने जो नैन खोए बैठे-बैठे घर में।
उनको ये दण्ड मिला, हमको वसंत मिला,
पथरीली राहों भरे घने पतझर में॥

'हम से' समाज सारा बोझिल-सा हो रहा था,
कैसे हम विचरण करते विकास में।
लिपि निर्माण किया, 'ब्रेल' जिसे नाम दिया,
ऐसे हमको भी ला खड़ा किया प्रकाश में॥

लिखना है, पढ़ना है, कैसे आगे बढ़ना है,
हमको सिखाने वाले वही तो महान हैं।
लुई हैं महान ऐसे, विधि का विधान जैसे,
हम सबके गुणों में उनका बयान है॥

निज अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए,
लुई जी ने लिपि 'ब्रेल' ज्ञान हमें दे दिया।

दुःख ये समाज का है, बिगड़े रिवाज का है,
जीते-जी ये उन्हें सम्मान भी न दे सका॥

ब्रेल के लेखन से ही, ब्रेल के पठन से ही,
दृष्टिहीन वर्ग आज प्रतिभा की खान है।
किन्तु ब्रेल लिपि के विकास का करुण गान,
एक सदी बाद मिला इसका जो मान है॥

भावना सुमन श्रद्धांजली अर्पित
करते जो 'लुई' ऐसे गुण के निधान हैं।
लुई हैं महान ऐसे, विधि का विधान जैसे,
हम सबके गुणों में उनका बयान है॥

दावा है प्रबल और वंदना सरल मेरी,
लुई का प्रकाशपुंज दिल में तो झाँकिये।
अब नहीं कम हम, प्रगति प्रबलतम,
प्रगति के पथ में निशान खुद आँकिये॥

ब्रेल लिपि ज्ञान नग जड़ ले जो सारा जग,
लुई जी महान का भी मान बढ़ जाएगा।
और शिक्षितों का वर्ग एक लिपि और सीख,
ज्ञान के उदधि का भी मान ही बढ़ाएगा॥

श्रम जो सफल होगा, ब्रेल लिपि फल होगा,
दिव्य चक्षुओं का ये दुनिया को दान है,
लुई हैं महान ऐसे, विधि का विधान जैसे,
हम सबके गुणों में उनका बयान है॥
षट् बिन्दुओं के बल जीवन संवर गया,
आज सच पूछिये तो वही भगवान है॥

1/153, एन.टी.पी.सी. टाउनशिप,
ऊँचाहार, रायबरेली-229406
मो. 09450059687

वीणा कपूर

महानायक लुई ब्रेल

करुणा-निधान की कैसी माया,
नैराश्य का अंधकार था छाया।
अवसादमय घिर आये मेघ,
भय कम्पित करने को चपला॥

'कूरे' पेरिस के एक गाँव में,
हुआ भाग्य और कर्म का सुमेल।
चार जनवरी, अठारह सौ नौ के शुभ दिन,
जग में आये लुई ब्रेल।

बालक लुई के छिन गये नयना,
विधि को भी तरस न आया।
अभी तो था नवाँकुर ही,
नन्हा पौध कैसा मुरझाया॥

बाल सुलभ आनन्द खो गया,
दुर्भाग्य का पड़ गया साया।
छड़ी देकर हाथ पुत्र को,
पिता ने चलना सिखलाया॥

क्या करूँ? कहाँ जाऊँ?
प्रश्नों ने हर पल घेरा।
क्योंकि अब जीवन में था,
यहाँ अंधेरा, वहाँ अंधेरा॥

प्रकृति प्रेमी पादरी ने किया,
उत्तम कार्य अति महान।
प्रेम भाव से सहज ही,
लुई में भरा अनन्य ज्ञान॥

भिन्न-भिन्न स्वरों की,
बालक को करवाई पहचान।
कौन है तोता, कौन है मोर,
किस पक्षी का कैसा शोर॥

कैसे गाती है कोयल,
प्यारी-प्यारी मीठी तान।
कैसे करते हैं भँवरे,
फूलों पर गुंजित गान॥

कहाँ-कहाँ खिला गुलाब,
कैसे-कैसे महकी बेला।
प्रकृति के आँचल में,
कैसा सौंदर्य का मेला॥

सुरभि से सुवासित,
कैसे हो जाती थी साँस।
कुछ सूँघकर, कुछ सुनकर,
कुछ स्पर्श से हुआ अहसास॥

वर्षों की कठिन साधना के,
पश्चात् आया एक नया उजाला।
दृष्टिहीनों के लिए निर्मित,
हो गयी एक अनूठी वर्णमाला॥

मात्र छह बिन्दुओं के अन्दर,
सारा-का-सारा ज्ञान समाया।
लिखना-पढ़ना होगा सम्भव,
लुई ब्रेल खिल कर मुसकाया॥

समाज को दे अद्‌भुत देन,
नक्षत्र ज्योतिहीन हुआ।
अठारह सौ बावन में लुई ब्रेल जब,
परम प्रकाश में विलीन हुआ॥

जीता है समाज में वो,
मान और सम्मान से।
अभिभूत करता है मानस को,
संगीत-माधुरी की तान से॥

विभिन्न कार्यों से वह,
सफलता से करता है काम।
खोज सकता है निज पुरुषार्थ से,
क्षितिज में भी नये आयाम॥

ब्रेल पद्धति से पाकर शिक्षा,
दृष्टिहीन नारी ने भी गौरव पाया।
घर-परिवार और कार्यक्षेत्र का,
अद्‌भुत सामंजस्य बनाया॥

सम्भव हो पाया ये सब,
लुई आपके प्रयास से।
राह दिखा दी नयनहीनों को,
निज दृढ़ विश्वास से॥

अंध जगत ही नहीं,
सम्पूर्ण मानवता तुम्हारी आभारी है।
असंख्य लोगों की जिन्दगी,
तुम्हारी 'देन' ने संवारी है॥

शिक्षित हो, सुसंस्कृत बन,
दृष्टिबाधित भी अब मुस्काते हैं।
देशहित संलग्न हो, वो,
माँ का मान बढ़ाते हैं॥

लुई आपकी देन विश्व में,
वास्तव में ही महान है।
उन्नीसवीं शती के महानायक,
तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम है।

13-सी प्रहलाद नगर,
मेरठ, उत्तर प्रदेश
मो. 09927268335

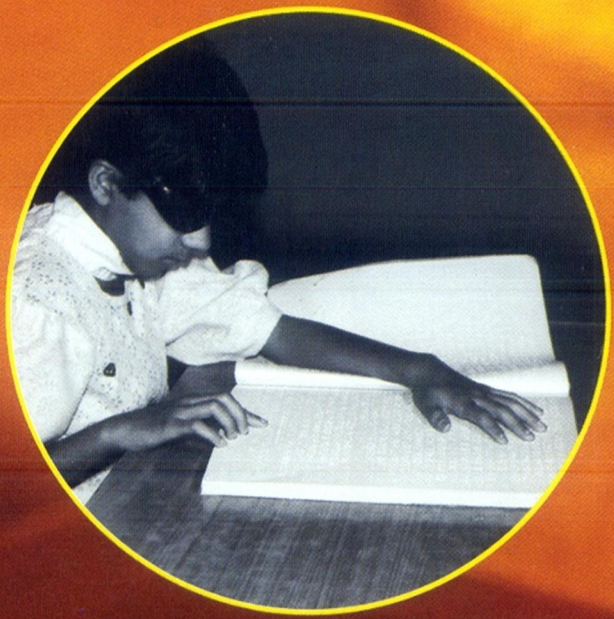

प्रकाशक:

ऑल इंडिया कन्फैडरेशन ऑफ दि ब्लाइंड

सैक्टर - 5, रोहिणी, दिल्ली-110085.

फोन : 011-27054082 फैक्स : 011-27050915

E-mail : aicbdelhi@yahoo.com